वैशाली जनपद में बढ़ती जनसंख्या की समस्या एवं नियोजन

डॉ0 प्रवीण कुमार भास्कर
भूगोल विभाग,
बी0आर0ए0 बिहार विश्वविद्यालय, मुजफ्फरपुर।

निबन्ध–सार :

प्रस्तुत शोध–पत्र वैशाली जिला (जनपद) में जनसंख्या (मानव संसाधन) भिन्नताओं के विश्लेषण एवं प्रबंधन पर केन्द्रित है। इसका प्रमुख लक्ष्य स्वतंत्रोत्तर अवधि में हुई जनसंख्या अभिवृद्धि, ग्रामीण एवं नगरीय जनसंख्या वृद्धि, जनसंख्या वितरण, जनसंख्या का भौगोलिक घनत्व, लिंगानुपात की भिन्नता, साक्षरता की स्थानिक भिन्नताऐं के अध्ययन से मानव संसाधन प्रबंधन का है। 1951 की जनगणना द्वारा प्रतिवेदित 9,42,472 की जनसंख्या 2011 की जनगणना में वृद्धिगत वृद्धि द्वारा 34,95,021 प्रतिवेदित हुआ है। अर्थात् इस अवधि में संचयी वृद्धि 270.83 प्रतिशत की जनसंख्या के वितरण में भी असंतुलन नगरों के अनियोजित प्रसार के रुप में ज्वलंत है। जनसंख्या के दशकीय वृद्धि के दर 1971–81 के दशक से जो वृद्धोउन्मुख हुआ, वह परिवार नियोजन (परिवार कल्याण) योजना के अन्तर्गत किये गये सभी प्रयासों के बावजूद उत्तरोत्तर बढ रहा है। साक्षरता स्थानिक भिन्नतायें आधारित अध्ययन क्षेत्र को चार संभागों में विभक्त कर विश्लेषणात्मक अध्ययन मानव संसाधन के क्षमतापूर्ण उपयोग न हो पाना परिलक्षित होता है।

संकेत शब्द :

जनसंख्या संभाग, जनसंख्या घनत्व, साक्षरता एवं अवस्थिति सह–गुणांक।

क्षेत्रीय विन्यास :

वैशाली जिला गंगा एवं गण्डक नदियों द्वारा क्रमशः पश्चिम एवं उत्तर में प्राकृतिक रुप से सीमांकित होता है। अध्ययन क्षेत्र का मानचित्र समद्विबाहु त्रिभुजाकार आकृति प्रदर्षित होता है, जिसका शीर्ष दक्षिण दिशा में गंगा नदी के सहारे तथा आधार उत्तर में मुजफ्फरपुर जिला की दक्षिणी सीमा से बनती है जबकि पूर्व में समस्तीपुर जिला के प्रशासनिक सीमा तक विस्तार है। इसका अक्षांशीय विस्तार $25^0$29′ उत्तरी अक्षांश से $25^0$56′ उत्तरी अक्षांश तथा देशांतरीय विस्तार $85^0$03′ पूर्वी देशांतर से $85^0$38′ पूर्वी देशांतर तक कुल 2036 वर्ग किलोमीटर में विस्तृत 34,95,021 मानव संसाधनों का आश्रय स्थल है। जिला मुख्यालय हाजीपुर गण्डक नदी के पूर्वी तट एवं गंगा नदी के उत्तरी तट के संगम पर स्थित है।

इस प्रकार वैशाली जिला 2011 के जनगणना में प्रशासनिक दृष्टि से 3 (तीन) अनुमण्डल, 16 (सोलह) प्रखंड, 1 (एक) नगर परिषद्, 3 (तीन) नगर पंचायत, 290 पंचायत, 1563 गाँव (1414 आबाद गाँव) एवं 3 शहर (हाजीपुर, लालगंज और महनार) है। जिला 8 विधानसभा क्षेत्रों में बँटा है, वहीं 3 (तीन) संसदीय क्षेत्रों का संघटक है जिसमें हाजीपुर संसदीय क्षेत्र के सभी 6 विधानसभा क्षेत्र (13 प्रखंडों) वैशाली जिला का है जबकि वैशाली संसदीय क्षेत्र में 1 (एक) विधानसभा क्षेत्र (3 प्रखंडों) एवं उजियारपुर संसदीय क्षेत्र में 1(एक) विधानसभा क्षेत्र (एक प्रखंड) वैशाली जिला का है।

उद्देश्य :

अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य हैं।

1. जनसंख्या वृद्धि से उत्पन्न मानवीय समस्याओं का अध्ययन।
2. मानव संसाधन के समुचित उपयोग का पता लगाना।
3. जनसंख्या वृद्धि का संसाधन पर पड़ने वाला दबाव का प्रकाश में लाना।
4. जनसंख्या की सम्पृकता अवस्था को ज्ञात करना।
5. जनसंख्या वृद्धि को नियंत्रित करने के साधनों का पता लगाना।

संकल्पनाएं :

1. जनसंख्या ज्यामितीय गति से एवं संसाधन गणितीय वृद्धि से बढ़ रही है।
2. तीव्र जनसंख्या वृद्धि जीवन की गुणवत्ता को प्रभावित करती है।
3. उच्च जनसंख्या वृद्धि मानव संसाधन से संसाधन पर बोझ बनता जाता है।

विधितंत्र :

इस शोध–पत्र के अध्ययन प्राथमिक एवं द्वितीयक आँकड़ों पर आधारित पर्यवेक्षणात्मक–वर्णात्मक विधि (Observation-Relations) द्वारा प्रस्तुत है। प्राथमिक आँकड़ों के लिए वैशाली जिला के संभागों में से प्रतिचयन विधि (Sampling Method) द्वारा एक गाँव का चयन किया गया है। प्रत्येक गाँव के सामाजिक एवं सांस्कृतिक रुप से बाँटे हुए सभी वर्गों के बीच से सर्वेक्षण किया गया है।

स्वतंत्रोत्तर अवधि में जनसंख्या की वृद्धि :

1951–61 के दशक में 20.22 प्रतिशत की दशकीय वृद्धि हुयी। इसके बाद (1961–71) प्रतिशत वृद्धि (19.06 प्रतिशत) थोड़ी अवनत रही। बाद के दो दशकों (1971–81 एवं 1981–91) में यह प्रगामी (क्रमशः 23.24 प्रतिषत एवं 29.88 प्रतिशत) रही। 1991–2001 के बीच इसमें पुनः ह्रास (26.67 प्रतिशत) आया लेकिन 2001–11 के मध्य यह पुनः नवोन्मेषित (28.57 प्रतिशत) हुयी है। अर्थात् स्वातंत्रोत्तर अवधि में दशक से दशक प्रतिशत वृद्धि का उतार–चढ़ाव रोजगारोन्मुखी प्रवासी जनसंख्या में होनेवाले ह्रास तथा वृद्धि पर निर्भर रहा है। कृषि, उद्योग, परिवहन तथा संचार के क्षेत्र में आयी प्रगति के कारण स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़े हैं। फलतः जीविकोपार्जन

तालिका–1

वैशाली जनपदः समग्र जनसंख्या अभिवृद्धि

क्र.सं.	जनगणना वर्ष	कुल जनसंख्या	अभिवृद्धि	प्रतिशत वृद्धि
1	*2*	*3*	*4*	*5*
1	1951	942472	.	.
2	1961	1133086	190614	20.22
3	1971	1348990	215904	19.05
4	1981	1662527	313537	23.24
5	1991	2146065	483538	29.08
6	2001	2718421	572356	26.67
7	2011	3495021	776600	28.57

के लिये स्थानीय संसाधनों पर निर्भरता बढ़ी है। समग्र रूप से श्रम–शक्ति का बाध्य स्थानांतरण दूर्बल हुआ है।

ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि

ग्रामीण जनसंख्या वृद्धि के आँकड़े स्वतंत्रोत्तर अवधि के लिये ही उपलब्ध हैं। वृद्धि की जो प्रवृति समग्र जनसंख्या के लिये पूर्ववर्ती विवेचना में प्रस्तुत है, तालिका–2 आधारित ग्रामीण जनसंख्या के लिये भी वही सत्य है।

तालिका–2

वैशाली जनपदः ग्रामीण जनसंख्या की अभिवृद्धि एवं प्रतिशत वृद्धि

क्र.सं.	जनगणना वर्ष	ग्रामीण जनसंख्या	अभिवृद्धि	प्रतिशत वृद्धि
1	*2*	*3*	*4*	*5*
1	1961	1074945	.––	.––
2	1971	1271349	196408	18.27
3	1981	1554804	283455	22.30
4	1991	2002708	447904	28.80
5	2001	2531766	529058	26.42
6	2011	3261942	730176	28.84

नगरीय जनसंख्या की वृद्धि

नगरीय जनसंख्या वृद्धि का दशकीय प्रतिशत दर ग्रामीण जनसंख्या की तुलना में 2001–11 को छोड़ सभी दशकों में उच्चतर है। इसके प्रोत्साहक कारकों में ग्रामीण–नगर प्रवास तथा अस्तित्व में आये हुये शहरों का पड़ोसी ग्रामीण क्षेत्र पर विस्तार है। इसके अतिरिक्त लोक–सुविधाओं (विद्युत, जल, परिवहन, आवास इत्यादि) से संपन्न बाजारों एवं हाटों का (लालगंज, महुआ) शहरों के रूप में उत्क्रमण भी शहरी जनसंख्या की तीव्र वृद्धि का कारण है।

तालिका – 3
नगरीय जनसंख्या अभिवृद्धि

क्र.सं.	जनगणना वर्ष	नगरीय जनसंख्या	अभिवृद्धि	प्रतिशत वृद्धि
1	*2*	*3*	*4*	*5*
1	1961	58141	.	.
2	1971	77641	19500	33.54
3	1981	107723	30082	38.74
4	1991	143357	35634	33.08
5	2001	186655	43298	30.20
6	2011	233079	46424	24.87

लेकिन 2001–11 के दशक में ग्रामीण जनसंख्या की वृद्धि दर (28.84 प्रतिशत) का नगरीय जनसंख्या की वृद्धि दर (24.87 प्रतिशत) से उच्चतर परिकलित होना एक नवीन प्रवृति का परिचायक है। यह संभवतः निम्नांकित कारणों में से किसी एक या सबों का प्रतिफल हैः–

1. शहरों में ग्रामीण क्षेत्र की अपेक्षा तीव्रता से घटता जन्मदर।
2. ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों में मृत्युदर में आया क्रमिक ह्रास।
3. प्रगतिशील कृषि एवं कृषीय–औद्योगिक क्षेत्र में होती प्रगति से प्रतिफलित जीविकोपार्जक अवसरों से निरूत्साहित ग्रामीण–नगर प्रवास।

<u>जनसंख्या वितरण</u> (2011)

जनसंख्या का वितरण एक अवस्थितिगत संकल्पना है (सिंह, सी.डी.; 1978)। अर्थात् क्षेत्र विशेष की भूमि पर बसी जनसंख्या के वितरण का यह एक अवस्थितिगत (Locational) पहलू है। यथार्थ संसार में यह कहीं छितराई (Dispersed) एवं विरल (Sparse) तो कहीं सघन (Dense) एवं गुच्छित (Clustered) हो सकता है। वितरण के उन्मुखीकरण (Orientation) पर आधारित इसका प्रारूप रेखिक (Linear) या रिबन (Ribbon-shaped), समान (Even), असमान (Uneven) इत्यादि हुआ करता है।

जनसंख्या वितरण को मानचित्र पर प्रदर्शित करने की दृष्टि से बिन्दु (Dot) तथा समानुपातिक वृत्त (Proportionate Circle) के संयोजन का प्रचलन बड़ा ही लोकप्रिय रहा है। यहाँ इस अध्ययन में (चित्र–1 अ एवं ब) द्वारा जनसंख्या (1961 एवं 2011) के भौगोलिक वितरण का प्रयास किया गया है। वितरण मानचित्र के अवलोकन से निम्नांकित तथ्य प्रकाशित हैं :

1. गुच्छित प्रारूप हाजीपुर, लालगंज, महनार अंचलों में इन्हीं नामों के नगरीय केन्द्रों पर प्रस्फुटित है। महुआ अंचल अनुमंडलीय स्तर का केन्द्र भी इसी गुच्छित वितरण को प्रदर्शित करता है।
2. रेखिक या रिबन प्रारूप का वितरण सामान्यतः हाजीपुर एवं मुजफ्फरपुर के बीच राष्ट्रीय राजमार्ग–77 के सहारे चिन्हित है।
3. समान एवं असमान वितरण को ग्रामीण जनसंख्या वाले संघटकों में चिन्हित किया जा सकता है। जनपद के आंतरिक पातेपुर, जन्दाहा, राजापाकर जैसे अंचल जहाँ समान वितरण का प्रदर्शन करते हैं, राघोपुर, महनार एवं बिदुपुर गंगा के दियारों के प्रभाव स्वरूप असमान वितरण प्रदर्शित करते हैं। बाढ़ से मुक्त क्षेत्र में जनसंख्या के सघन सकेन्द्रण के कारण समान वितरण एवं बाढ़–प्रभावित क्षेत्रों में विरल सकेन्द्रण के कारण असमान वितरण का प्रतिनिधित्व होता हैं।
4. जनसंख्या वितरण के प्रारूपों की और भी सटीक पहचान के लिये अवस्थिति सह–गुणांक (महतो, के.; 1981) की तकनीकी के परीक्षण की प्रवृति जनसंख्या भूगोलवेत्ताओं में प्रचलित हुयी है। इसके सूत्र[1] में निहित सिद्धांत के अनुसार अवस्थिति सह–गुणांक का मूल्य 01 से घटती एवं बढ़ती दिशा में क्रमशः दूर्बल तथा सबल होते सकेन्द्रण का प्रदर्शन करता है। तद्नुसार परिकलन से प्राप्त

---

2. $\text{L.C.} = \frac{P_i}{A_i}$ यहाँ 'L.C.' अवस्थिति सह–गुणांक, 'P_i' जनपद की कुल जनसंख्या में संघटक अंचल का प्रतिशत योगदान तथा 'A_i' जनपद के कुल क्षेत्रफल में उसी संघटक अंचल का प्रतिशत योगदान है।

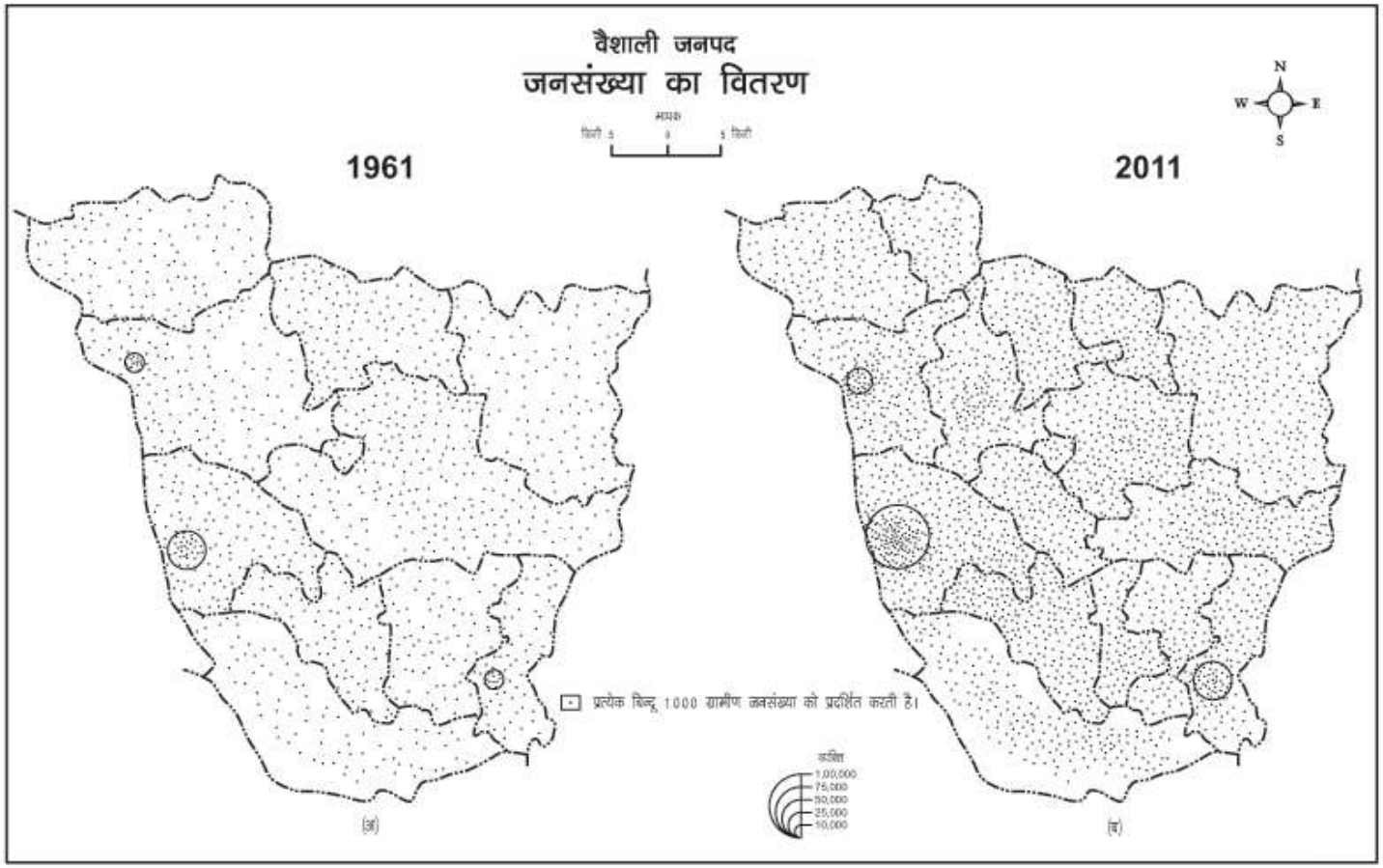
वैशाली जनपद
जनसंख्या का वितरण
1961
2011
N
W
E
S
प्रत्येक बिन्दु 1000 ग्रामीण जनसंख्या को प्रदर्शित करती है।
1,00,000
75,000
50,000
25,000
10,000

चित्र–1

मूल्यों को तालिका–4 में अवरोही क्रम (Descending Order) में सजाया गया है। एक से उच्चतर मूल्य वाले सघन एवं न्यूनतर मूल्य वाले अंचलों को विरल सकेन्द्रण की श्रेणी में रखा गया है। पुनः मूल्य के आधार पर सघन, सामान्यतः सघन तथा विरल को सामान्यतः विरल एवं विरल में उप–विभाजित किया गया है।

तालिका – 4

अवस्थिति सहगुणांक

क्र.सं.	अंचल	अवस्थिति सहगुणांक	सकेन्द्रण का स्वरूप
1	*2*	*3*	*4*
1	हाजीपुर	1.81	सघन
2	बिदुपुर	1.32	
3	राजापाकर	1.17	
4	महुआ	1.14	
5	महनार	1.12	
6	चेहराकलां	1.07	सामान्यतः सघन
7	लालगंज	1.04	
8	जन्दाहा	1.03	
9	गोरौल	1.01	
10	भगवानपुर	0.98	सामान्यतः विरल
11	देसरी	0.98	
12	वैशाली	0.83	
13	सहदेई बुजुर्ग	0.81	
14	पातेपुर	0.81	
15	पटेढ़ी बेलसर	0.72	विरल
16	राघोपुर	0.58	

तलिका–4 के अनुसार हाजीपुर (1.81), बिदुपुर (1.32), राजापाकर (1.17), महुआ (1.14) एवं महनार (1.12) सघन सकेन्द्रण के संघटक हैं। इनमें हाजीपुर एवं महनार शहरी जनसंख्या वाले, महुआ अनुमंडलीय स्तर के मुख्यालय के रूप में एवं शेष ग्रामीण जनसंख्या के संघटक हैं। सामान्यतः सघन सकेन्द्रण में चेहराकला (1.07), लालगंज (1.04), जन्दाहा (1. 03) एवं गोरौल (1.01) सम्मिलित हैं। इसमें लालगंज शहरी जनसंख्या से युक्त है, गोरौल पूर्व–मध्य रेलवे का एक महत्वपूर्ण स्टेशन है। चेहराकला राष्ट्रीय राजमार्ग 77 के सहारे फैला हुआ है तथा जन्दाहा ग्रामीण जनसंख्या से युक्त राष्ट्रीय राजमार्ग–103 के सहारे विस्तार प्राप्त करता है। सामान्यतः विरल सकेन्द्रण के सभी संघटक बिना किसी शहर के भगवानपुर (0.98), देसरी (0.98), वैशाली (0.83), सहदेई बुजुर्ग (0.81) एवं पातेपुर (0.81) हैं, जबकि विरल सकेन्द्रण दो अंचलों – पटेढ़ी बेलसर

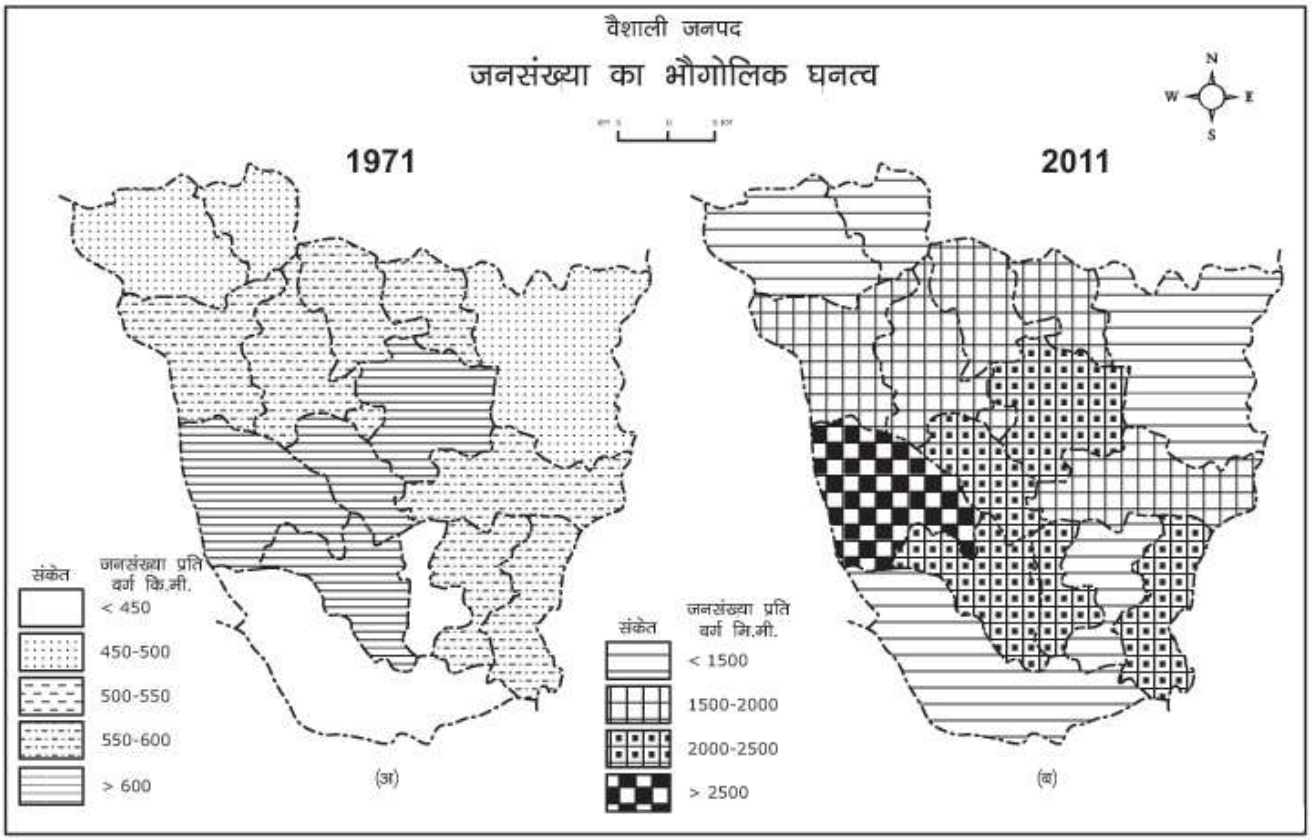
वैशाली जनपद
जनसंख्या का भौगोलिक घनत्व
N
W
E
S
1971
2011
संकेत
जनसंख्या प्रति वर्ग कि.मी.
< 450
450-500
500-550
550-600
> 600
(अ)
संकेत
जनसंख्या प्रति वर्ग मि.मी.
< 1500
1500-2000
2000-2500
> 2500
(ब)

चित्र–2

(0. 72) एवं राघोपुर (0.58) में विकसित हैं। इनमें राघोपुर गंगा नदी के प्रवाह मार्ग में नदी द्वीप के रूप में अपने एक विशाल क्षेत्र में विकसित दियारे से कुप्रभावित है।

जनसंख्या का भौगोलिक घनत्व :

जनसंख्या घनत्व एक संबंधनात्मक संकल्पना है जिसमें संबंधित दो पक्ष मानव एवं भूमि हैं, जिसकी अभिव्यक्ति भूमि की प्रति इकाई (वर्ग किलोमीटर, वर्ग मील इत्यादि) व्यक्तियों की संख्या से होती है। संख्या के अनुसार घनत्व की गहनता का निर्धारण होता है। इस संकल्पना के अनुसार भूमि की प्रति इकाई पर बसी जनसंख्या का आकार, दूसरे शब्दों में भूमि की क्षमता के अनुसार होता है। भूमि की क्षमता उसके भौतिक एवं अवस्थितिगत गुणों से निर्मित होती है जो उसकी वाहक क्षमता का निर्धारण भी करती है और समग्र रूप से भूमि की वाहक क्षमता और उससे पोषित जनसंख्या के बीच एक समायोजनात्मक संबंध होता है। इस क्रम में भूमि की वाहक क्षमता की तुलना में जनसंख्या की तीव्रतर वृद्धि या तो जनसंख्या प्रवास का आधार तैयार करती है अथवा वहाँ बसी जनसंख्या अपने प्रोद्यौगिकीय स्तर के उन्नयन द्वारा भूमि की वाहक क्षमता में वृद्धि का प्रयास करती है।

घनत्व के जनपदीय के औसत (1785.09) की तुलना में लालगंज (1847.82), गोरौल (1796.34), चेहराकला (1917.78), महुआ (2031.02), जन्दाहा (1836.54), राजापाकर (2093.05), हाजीपुर (3234.32), बिदुपुर (2347.41), महनार (2006. 88) उच्चतर घनत्व के संघटक हैं। शेष पटेढ़ी बेलसर (1289), भगवानपुर (1756.67), पातेपुर (1442.69), राघोपुर (1031.44), सहदेई बुजुर्ग (1452.14), वैशाली (1478.83), देसरी (1751.07) जनपद औसत से न्यूनतर घनत्व का प्रतिनिधित्व करते हैं। समग्र रूप से शहरों से युक्त संघटकों का भौगोलिक घनत्व बिना किसी अपवाद के उच्चतर है (चित्र–2. अ एवं ब)।

लिंगानुपात का स्थानिक परिपेक्ष :–

2011 की जनगणना के अनुसार वैशाली जनपद में प्रति हजार पुरूषों पर 895 स्त्रियाँ है। स्त्रियों के अभाव का बल्कि यह एक ऊँचा क्रम कहा जा सकता है। प्रस्तुत तालिका–5 से यह स्पष्ट है कि उनके अभाव का क्रमशः निम्न क्रम से उच्च क्रम की ओर प्रगणन जनसंख्या के बढ़ते लैंगिक असंतुलन का एक अशुभ संकेत है।

लिंगानुपात का जनपदीय औसत प्रति हजार पुरूषों पर 895 स्त्रियों का है। इससे उच्चतर अनुपात के संघटक वैशाली (906), पटेढ़ी बेलसर (915), गोरौल (907), चेहराकला (912), पातेपुर (921), देसरी (903), सहदेई बुजुर्ग (902) एवं महनार (913) है जबकि न्यूनतर अनुपात वाले अंचल लालगंज (881), भगवानपुर (891), जन्दाहा (887), राजापाकर (892), हाजीपुर (886), राघोपुर (863) एवं बिदुपुर (879) हैं। लिंगानुपात के उपरोक्त प्रतिरूपों का संकेत यह है कि शहर और शहर के चतुर्दिक फैले क्षेत्र में स्त्रियों के अभाव का क्रम अपेक्षाकृत उच्चतर है। अर्थात् लालगंज एवं हाजीपुर जैसे शहरों से युक्त संघटकों में पुरूषों की प्रधानता है। दूसरी ओर शहरों के समीपस्थ के संघटकों में पुरूषों की प्रधानता का कारण बिना अपना स्थायी आवास बदले शहरों में उन्हें प्राप्त होने वाले जीविकोपार्जन के अवसर हैं जो हाल के वर्षों में मनरेगा, नरेगा तथा प्रधानमंत्री रोजगार योजना कार्यक्रमों के अन्तर्गत उन्हें प्राप्त हुये हैं।

तालिका – 5
लिंगानुपात, 2011

क्र.सं.	अंचल	कुल पुरुष जनसंख्या	कुल महिला जनसंख्या	लिंगानुपात
1	*2*	*3*	*4*	*5*
1	वैशाली	98441	89045	906
2	पटेढ़ी बेलसर	49947	45722	915
3	लालगंज	141059	124325	881
4	भगवानपुर	109864	97898	891
5	गौरोल	93127	84459	907
6	चेहराकलां	68517	62487	912
7	पातेपुर	192661	177521	921
8	महुआ	150128	134398	895
9	जन्दाहा	146352	129865	887
10	राजापाकर	83583	74547	892
11	हाजीपुर	235425	208551	886
12	राघोपुर	125023	107886	863

13	बिदुपुर	143090	125759	879
14	देसरी	46046	41560	903
15	सहदेई बुजुर्ग	66987	60409	902
16	महनार	94285	86054	913
	जनपद	1844535	1650486	895

साक्षरता एवं साक्षरता की स्थानिक भिन्नतायें

साक्षरता के प्राचलिक द्वारा किसी भी समाज या राष्ट्र की सांस्कृतिक प्रगति का परिमाण निर्धारण किया जा सकता है। जनसंख्या का यह एक गुणात्मक नियामक भी माना जाता है। व्यक्ति एवं समाज को प्रत्येक दृष्टि से जागरूक बनाये रखने में इसका बड़ा ही महत्त्व है। जनसंख्या की राष्ट्रीय नीतियों का सही मूल्यांकन भी एक साक्षर समाज ही कर सकता है। अध्ययन क्षेत्र के लिये यह और भी अधिक प्रासंगिक है जहाँ जनसंख्या के प्रति लोगों का दृष्टिकोण एक दूसरे से काफी भिन्न है। निरक्षरता बल्कि आर्थिक विकास की राह में एक बाधा भी है। अतः समाज के सर्वांगिण विकास के लिये न्यूनतम् स्तर की साक्षरता प्रत्येक व्यक्ति के लिये परमावश्यक है। राष्ट्रीय दायित्व के रूप में सुधारात्मक उपायों की स्वीकार्यता भी व्यक्ति में साक्षरता द्वारा ही आती है (चन्दना, आर.सी.; 1986)।

इन स्थानिक प्रतिरूपों से स्पष्ट है कि साक्षरता दर पर शहरीकरण और रेल तथा सड़क से प्राप्त परिवहन तथा संचार सुविधाओं की भूमिका प्रमुख है। संभागों का विश्लेषण यहाँ शहरीकरण तथा साक्षरता के आलोक में अगले अनुच्छेदों में प्रस्तुत है–

1. जिला मुख्यालय जनसंख्या प्रभावित उच्च गुणवत्ता संभाग :

इसके संघटक सिर्फ जिला मुख्यालय प्रखंड हाजीपुर आता है। राज्य की राजधानी पटना से महत्मा गाँधी सेतु से जुड़ने के बाद प्रखण्ड का चतुर्दिक विकास हुआ है। इसके मध्य में

तालिका– 6

वैशाली जनपद : सामान्य साक्षरता, 2011

क्र. सं.	अंचल	>6 वर्ष आयु की कुल जनसंख्या	साक्षर	साक्षरता प्रतिषत		
				महिला	पुरुष	कुल
1	*2*	*3*	*4*	*5*	*6*	*7*
1	वैशाली	156337	103789	57.09	74.78	66.39
2	पटेढ़ी बेलसर	79779	52668	56.00	75.19	66.02
3	लालगंज	221459	154452	61.06	77.37	69.74
4	भगवानपुर	172961	120019	60.63	77.20	69.39
5	गोरौल	147428	99214	56.79	76.85	67.30
6	चेहराकलां	108037	69684	54.00	74.09	64.50
7	पातेपुर	302995	189466	52.32	71.90	62.53
8	महुआ	236347	160378	57.33	77.28	67.86
9	जन्दाहा	229553	150746	55.46	74.70	65.67
10	राजापाकर	131355	88795	56.92	77.12	67.60
11	हाजीपुर	374187	270409	63.44	80.09	72.27
12	राघोपुर	185886	94196	39.73	59.97	50.67
13	बिदुपुर	222104	153979	58.87	78.51	69.33
14	देसरी	72475	48225	56.23	75.85	66.54
15	सहदेई बुजुर्ग	104397	70052	56.59	76.57	67.10
16	महनार	147828	100668	58.71	76.67	68.10

	जनपद	2893128	1926740	56.73	75.41	66.60

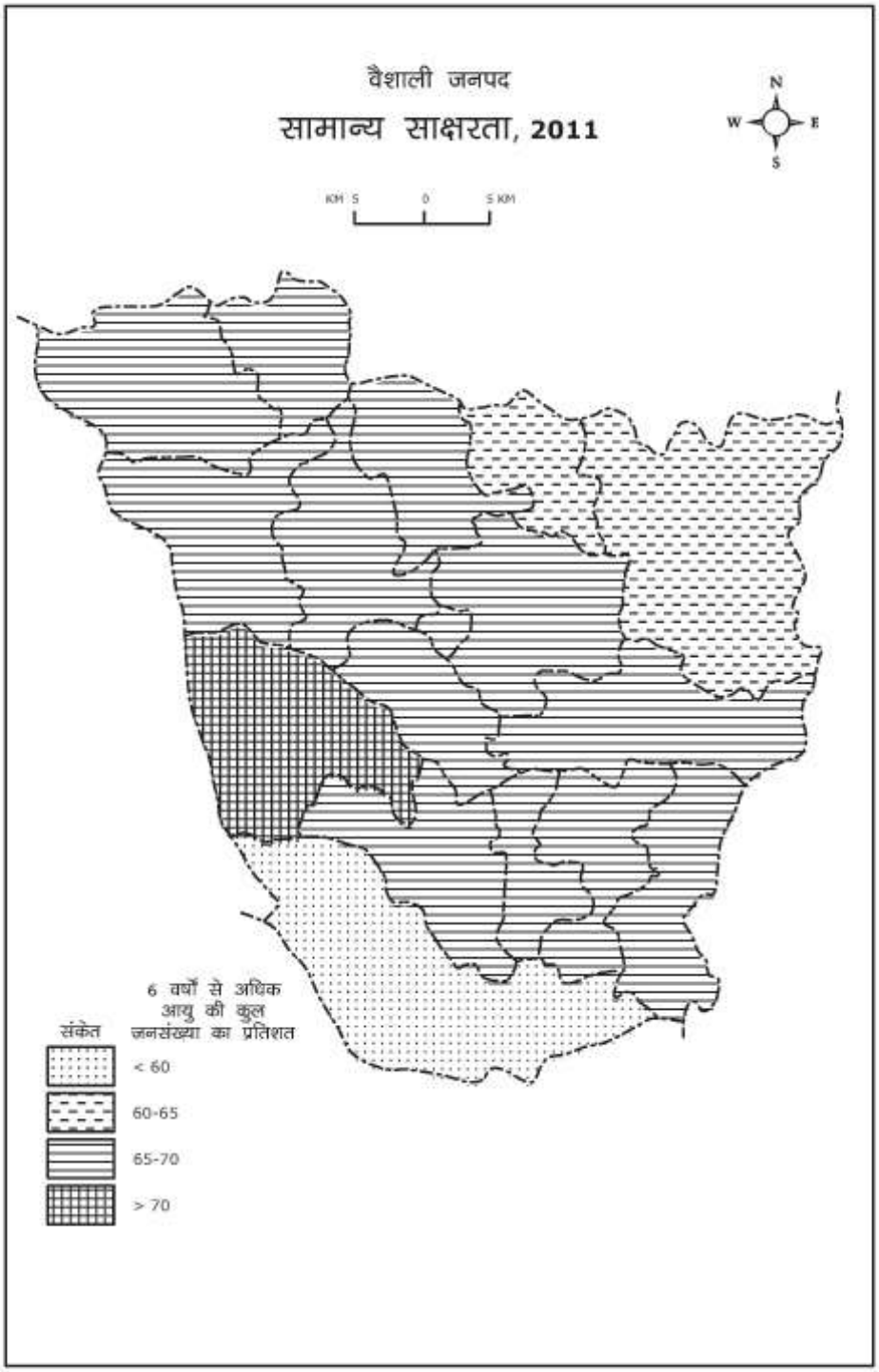

चित्र–3

तालिका– 7
वैशाली जनपद : जनसंख्या संभाग

क्र. सं.	संभाग	समुदायिक विकास प्रखंड	साक्षरता प्रतिषत		
			महिला	पुरुष	कुल
1	*2*	*3*	*4*	*5*	*6*
1	शहरी जनसंख्या प्रभावित उच्च गुणवत्ता संभाग	हाजीपुर	63.44	80.09	72.27
2	शहरी जनसंख्या प्रभावित उच्च गुणवत्ता संभाग	लालगंज, भगवानपुर, बिदुपुर, महनार, महुआ, राजापाकर, गोरौल, सहदेई बुजुर्ग	58.57	77.30	68.47
3	ग्रामीण जनसंख्या प्रभावित निम्न गुणवत्ता संभाग	देसरी, वैशाली, पटेढ़ी बेलसर, जन्दाहा, चेहराकला, पातेपुर	54.65	73.89	64.75
4	ग्रामीण जनसंख्या प्रभावित अतिनिम्न गुणवत्ता संभाग	राघोपुर	39.73	59.97	50.67
5	कुल	वैशाली (जिला)	56.73	75.41	66.6

हाजीपुर औधोगिक क्षेत्र निर्धारित है। जहाँ प्लास्टिक उद्योग, बिस्कुट उद्योग, आइस्क्रीम उद्योग एवं आटा उद्योग, टमाटर सॉस उद्योग, कोल्ड ड्रिंक उद्योग आदि मझौले उद्योग स्थापित है। प्राथमिक से उच्च शिक्षा एवं तकनीकी शिक्षा के लिए कई सरकारी एवं गैर–सरकारी संस्थाएं हैं जो यहाँ की साक्षरता के साथ शैक्षणिक गुणवत्ता भी अग्रेत्तर होती जा रही है। स्वस्थ्य एवं अन्य मानवीय आवश्यकताओं की सुविधा उच्च गुणवत्ता संभाग बनने में मददगार है। इस संभाग से एन.एच. 19 गुजरती है तो एन.एच. 103 एवं एन.एच. 77 के साथ तीन एस.एच. 49, 74 एवं 93 आरम्भ होकर विभिन्न क्षेत्रों तक पहुँच बनाती है।

यहाँ की सामान्य साक्षरता (72.27 प्रतिशत) तथा महिला साक्षरता (63.44 प्रतिशत) वैशाली जिला (66.60 प्रतिशत तथा 56.73 प्रतिशत) से बड़े अन्तर के साथ उच्चत्तर नहीं बल्कि राज्य के अनुपात (63.82 प्रतिशत तथा 53.33 प्रतिशत) से भी उच्चत्तर दृष्टव है। अर्थात् सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सामाजिक, उद्योग, आर्थिक – सभी दृष्टिकोणों से यह संभाग सम्मुन्नत और बिहार के मानचित्र पर ज्वलंत बना है।

2. शहरी जनसंख्या प्रभावित उच्च गुणवत्ता संभाग :

इसके निर्माणकारी संघटकों लालगंज, भगवानपुर, बिदुपुर, महनार, महुआ, राजापाकर, गोरौल एवं सहदेई बुजुर्ग है। इसके सात संघटक लालगंज, भगवानपुर, गोरौल, बिदुपुर, महनार, सहदेई बुजुर्ग एवं महुआ परिवहन सुविधा से युक्त है। भगवानपुर और गोरौल को एन.एच.77, बिदुपुर एवं सहदेई बुजुर्ग को एन.एच. 103 तथा रेलवे स्टेशन है जबकि महुआ, लालगंज, बिदुपुर, महनार को क्रमशः एस.एच. 49 (हाजीपुर–महुआ–मुसरीघरारी), एस.एच. 74 (हाजीपुर–लालगंज–वैशाली) एवं एस.एच. 93 (हाजीपुर–बिदुपुर–महनार) की पहुँच है। जहाँ से व्यवसायिक गतिविधियाँ का सघन संचालन होता है। हाजीपुर–वैशाली प्रांतीय राजमार्ग द्वारा पोषित एक महत्वपूर्ण सेवा केन्द्र है।

यहाँ की सामान्य साक्षरता (68.47 प्रतिशत) तथा महिला साक्षरता (58.57 प्रतिशत) वैशाली जिला (66.60 प्रतिशत तथा 56.73 प्रतिशत) से ही उच्चतर नहीं बल्कि राज्य के अनुपात (63.82 प्रतिशत तथा 53.33 प्रतिशत) से भी उच्चतर है। अर्थात् सांस्कृतिक, शैक्षणिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टिकोणों से यह संभाग बिहार के मानचित्र उन्नत बना है।

3. ग्रामीण जनसंख्या प्रभावित निम्न गुणवत्ता संभाग :

इसके निर्माणकारी संघटक – देसरी, वैशाली, पटेढ़ी बेलसर, जन्दाहा, चेहराकला, पातेपुर प्रखंड तीन समूहों में एक दूसरे से विलग है। जिला के उत्तरी एवं पूर्वी भाग में स्थित जो पूर्णतः ग्रामीण क्षेत्रों से अच्छादित है। वैसे तो जन्दाहा प्रखंड से एन.एच. 103 वहीं वैशाली एवं पातेपुर प्रखंड से क्रमशः एस.एच. 74 एवं 49 गुजरती है। किन्तु बाजार क्षेत्रीय आवश्यकता की पूर्ति के लिए प्रखंड मुख्यालय में ही सकेन्द्रीत है। बाजार में कृषि उत्पाद एवं कृषि कार्य के सामग्री की ही बहुलता है।

संभाग सामान्य एवं महिला साक्षरता (64.75 प्रतिशत एवं 54.65 प्रतिशत) तथा वैशाली जिला (66.60 प्रतिशत तथा 56.73 प्रतिशत) के एवं राज्य के अनुपात (63.82 प्रतिशत तथा 53.33 प्रतिशत) के समीप प्रतीत होता है। यह राज्य के तुलनात्मक रुप से सामान्य स्थिति की ओर इंगित करता है।

4. ग्रामीण जनसंख्या प्रभावित अतिनिम्न गुणवत्ता संभाग :

इसके निर्माणकारी संघटक सिर्फ एक प्रखंड राघोपुर है जो पूर्णतया ग्रामीण जनसंख्या को संयोए हुए है। यह गंगा नदी की दो धाराओं के बीच टापू जैसी स्थिति में जनपद के शेष भाग से अलग–अलग एकाकी रुप में अवस्थित है। आवागमन एवं परिवहन तथा संचार की असुविधा के कारण इस प्रखंड की सहभागिता आर्थिक क्रियाओं में सीमित है। सामान्य साक्षरता (50.67 प्रतिशत) तथा महिला साक्षरता (39.73 प्रतिशत) के दृष्टि से वैशाली जिला एवं बिहार राज्य दोनों के तुलना में पिछड़ा है।

निष्कर्ष :

अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि वैशाली जिला में जनसंख्या वृद्धि तीव्र गति से हो रही है। इस बढती जनसंख्या का प्रभाव जनपद विकास के विभिन्न तत्वों (शिक्षा, स्वस्थ्य, परिवहन, जल आपूर्ति, बिजली आपूर्ति आदि) को प्रभावित कर रहा है। खाश कर शिक्षित एवं कौशलपूर्ण बेरोजगार में अप्रत्याशित वृद्धि दृष्टिगोचर हो रहा है। जिला अंतर्गत परिवहन तंत्रिकाओं के जाल की सघनता द्वारा भी क्षेत्र के विकास की स्थानिक भिन्नताएँ प्रभावित है।

अतः यहाँ निष्कर्ष के तौर पर कहा जा सकता है कि पूर्व–मध्य रेलवे की मुख्य शाखा तथा सड़क मार्गों पर अवस्थित सेवा केन्द्रों का प्रभाव भी जनपद के विकास पर परिलक्षित है। किन्तु बढती जनसंख्या पर नियंत्रण स्थापित कर, कृषि आधारित उद्योगों एवं फल आधारित जैसे केला, लीची, आम आधारित उद्योगों को स्थापित कर उपलब्ध संसाधनों का समुचित प्रयोग जनपद को खुशहाल बना सकता है। बशर्ते बढती जनसंख्या एक आवश्यक शर्त है।

संदर्भ :

1. सिंह, सी.डी.; 1978 : ट्रान्सफॉरमेसन ऑफ एग्रीकल्चर, विशाल पब्लिकेशन्स, कुरूक्षेत्र, पृ.पृ. 147–50
2. महतो, के.; 1981 : पोपुलेशन मैपिंग : ए मेथोडो– लॉजिकल अप्रोच, इंडियन जियोग्राफिकल स्टडीज रिसर्च, वौल्यूम–17, जियोग्राफिकल रिसर्च सेन्टर, पटना, भारत, पृ.52
3. चन्दना, आर. सी.;1986 : ए जियोग्राफी ऑफ पोपुलेशन एक्सेप्ट डिटरमिनेट्ा एंड पैटर्न, कल्याणी पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली।
4. तिवारी, वि. के.; 1997 : भारत का जनसंख्या भूगोल, खण्ड–2, हिमालय पब्लिकेशिंग हाउस, मुम्बई, पृ. 349.
5. मुजफ्फरपुर जिला जनगणना पुस्तिका, 1961
6. वैशाली जिला जनगणना पुस्तिका, 1981
7. जनगणना के कम्प्यूटरीकृत ऑकड़े, 2011